VOL- IX | ISSUE- XII | DECEMBER | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

गुरूदत्त सिंह ढाका
(शोधकर्ता)

डॉ.अनिल कुमार
(शोध निर्देशक)

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए किया गया प्रयास है। इस प्रयास को अनेक शिक्षा–शास्त्री मूर्त रूप प्रदान करते हैं। शिक्षा विकास की वह गाड़ी है, जो कि जीवन में निरन्तर चलती रहती है तथा मानव जीवन में सम्पूर्णता लाती है। शिक्षा का कार्य मनुष्य को अपने भौतिक व आध्यात्मिक पर्यावरण के लिए तैयार करना है और शिक्षक का कार्य इन सभी लक्षणों के व्यवहार में मूर्त स्वरूप प्रदान करना है। इस प्रकार शिक्षा समाज में विभिन्न वर्गों के लिए विशेष संबल प्रदान करती है।

शिक्षा का प्रमुख स्तम्भ शिक्षक हैं। यह एक प्रभावपूर्ण अनुभवी तथा ज्ञान रखने वाला व्यक्तित्व होता हैं जिसका कार्य नई संस्कृति को ज्ञान प्रदान करना होता हैं। इसके सम्पर्क में आने से ही शिक्षार्थी में परिवर्तन आता हैं तथा वह समाज की आवश्यकता अनुसार कुशल नागरिक तथा सक्रिय सदस्य बनाता हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण–प्रभावशीलता से तात्पर्य है प्रभावशाली रूप से विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण अर्थात् पूर्व निर्धारित उद्देश्यों तथा वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों की सरल, सुगम तथा वस्तुनिष्ठ रूप से प्राप्ति हेतु ऐसा शिक्षण जो रोचक हो, आकर्षक हो तथा छात्रों को पुनर्बलन प्रदान करता रहे, प्रभावशाली समझा जाता है। डी. जी. रियान्स ने अपनी पुस्तक ''करेक्टरिस्टिक्स ऑफ टीचर्स'' में शिक्षक प्रभावकता पर विस्तृत चर्चा की है। इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए थिनकॉफस ने शिक्षण प्रभावकता का प्रयोग किया और शिक्षण–प्रभावकता के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की। शिक्षक प्रभावशीलता, शिक्षण अवस्थाओं, शिक्षण आव्यूहन, शिक्षण सिद्धान्त, शिक्षण उद्देश्य तथा शिक्षण–प्रतिमानों की सफलता पर निर्भर होती है। इनका प्रयोग कितनी सफलता के साथ किया गया है, शिक्षण की प्रभावकता की वही मात्रा होती है। ''एक अध्यापक उतना ही प्रभावशील होगा जितना वह छात्रों के समस्त प्रकार के विकास में योगदान दें, उनकी आदतों में सुधार करे, सूझ का विकास करे, उनमें वांछित अभिवृत्तियाँ पैदा करें और उनका प्रभावी ढंग से समायोजन करे।

शिक्षण प्रभावशीलता शब्द का प्रयोग शिक्षकों को प्राप्त होने वाले परिणामों या शिक्षा के कुछ निर्दिष्ट लक्ष्य की दिशा में विद्यार्थियों की प्रगति की मात्रा के संदर्भ में किया जाएगा। इस परिभाषा का एक निहितार्थ यह है कि शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षकों का व्यवहार नहीं होना चाहिए। मेडली (१९८२) ने शिक्षक उपलब्धि और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच भेद को दूर करने का प्रयास किया यह कहकर कि शिक्षक का प्रदर्शन यह दर्शाता है कि शिक्षक एक नौकरी पर क्या करता है। अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य को पूर्ण करने की क्षमता, शिक्षक के व्यक्तित्व के आधार पर उनकी शिक्षण क्षमता का निर्धारण करना बहुत ही कठिन होता है।

शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति

मनुष्य को समाज में अपने पद, प्रतिष्ठा, मान–सम्मान व अपने जीवन निर्वाह हेतु कोई न कोई व्यवसाय चुनना पड़ता है। सभी व्यवसाय एक जैसे नहीं होते हैं बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से भिन्न होते है। समाज में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का एक लम्बा जाल फैला हुआ है जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा एवं योग्यतानुसार चुनता है। कुछ व्यवसायों में भाग–दौड़ अधिक करनी पड़ती है। कुछ व्यक्ति भाग–दौड़ के जीवन से परे शान्तिमय जीवन–यापन करना चाहते हैं। इसलिए वह पठन–पाठन जैसे पुनीत

कार्य को अपने व्यवसाय के रूप में चयनित करते है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ''शिक्षण कार्य को शिक्षण व्यवसाय के रूप में चयनित करने वाले व्यक्ति शिक्षण व्यवसायी कहलाते है और यह व्यवसाय शिक्षण व्यवसाय कहलाता है।''

व्यावसायिक सन्तुष्टि तभी हो सकती है जब या तो उसे व्यवसाय से सामाजिक, मानसिक और आर्थिक सन्तुष्टि प्राप्त हो या उसमें उच्च मूल्य पायें जाए। यदि किसी शिक्षक ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है और उच्च कक्षाओं में पढ़ाने का आकांक्षी हो तो वह प्रारम्भिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य से सन्तुष्ट नहीं होगा। किसी अन्य व्यवसाय की चाह रखने वाला व्यक्ति भी शिक्षण व्यवसाय के साथ न्याय नहीं कर सकता है।

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति का किसी विशिष्ट घटना, प्राणी, विचार या वस्तु के प्रति दृष्टिकोण है। व्यक्ति का यह दृष्टिकोण ही उसके व्यवहार को प्रभावित करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार ही व्यक्ति विभिन्न प्राणियों, घटनाओं तथा वस्तुओं के प्रति व्यवहार करता है। इस प्रकार अभिवृत्ति व्यक्ति की वह प्रकृति है, जो उसे किसी लक्ष्य, स्थिति या प्रस्ताव के अधीन अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए उत्तेजित करती है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु राजस्थान राज्य के हेतु चुरू जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ४०० पुरूष शिक्षकों व ४०० महिला शिक्षकों (कुल ८०० शिक्षक) का चयन किया गया है।

विधि–

इस शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण–

इस हेतु शोधकर्ता द्वारा मानकीकृत उपकरणों के रूप में डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित 'शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण मापनी' तथा डॉ. एस. पी. आहुवालिया द्वारा निर्मित 'शिक्षक अभिवृत्ति मापनी' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी–

शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं सहसंबंध का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य–

१. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

विश्लेषण–

1- सारणी संख्या–१

चर	संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता स्तर
शिक्षण अभिवृति	८००	३०८.७९	१५.६०	०.२९८१	सार्थक सहसंबंध है
शिक्षण प्रभावशीलता	८००	३१५.०५	१३.१५		

०.०१ व ०.०५ सार्थकता स्तर

परिणाम एवं व्याख्या–

सारणी संख्या १ के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः ३०८.७९ और ३१५.०५ है। इन दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः १५.६० और १३.१५ है तथा दोनों के मध्यमानों का सहसंबंध गुणांक ०.२९८१ है। मुक्तांश १५९८ (द–२) के लिए ०.०५ स्तर पर त का मान ०.०४३८ तथा ०.०१ स्तर पर त के मान ०.०५७५ से परिगणित मान अधिक है। अतः परिकल्पना 'उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।' को पूर्णतः अस्वीकृत किया जाता है।

दोनों के मध्य शून्य सहसंबंध प्राप्त हुआ है जैसा कि लेखाचित्र से भी स्पष्ट हो रहा है।

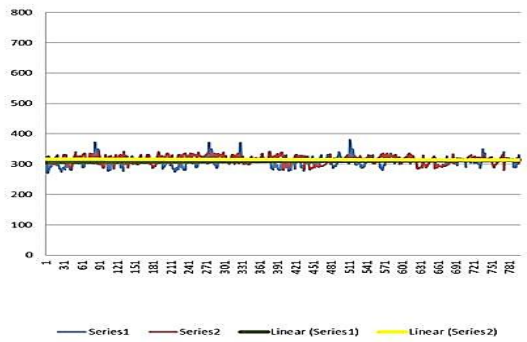

सारांश–

अध्ययन के परिणाम से उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध ग्रामीण और शहरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- **Adaval, S.B., et al (1983),** *An Analytical study of Teacher Education in India*, Allahabad, Amitabh Prakashan.
2- **Adaval, S.B., et al (1976),** *Teacher Education-Problems and perspectives*, New Delhi, NCERT.
3- **Agrawal, J.C. (1978),** *The Progress of Education in Free India*, New Delhi, Arya Book Depot.
4- **Agrawal, J.C. (1983),** *Educational Research*, N.Delhi, Arya Book Depot.
5- **Agarwal, K., Kumar. S.,(2009).** Teacher Effectiveness of Autonomous and Non-Autonomous College Teachers in relation to their Mental Health. Abstract in Journal of Indian Education, Vol. XXIX, No. 2, Aug. 2009, NCERT, P.P. 84-94.
6- **Ahluwalia, S.P. (1978),** *Manual for Teacher Attitude Inventory*, Agra, National Psychological Corporation.
7- **Al-Afendi, M.H. & Baloch, N.A. (1980),** *Curriculum and Teacher Education*, Jeddah, Hodder and Stoughton Ltd.
8- **Allen L. Edwards, (1969),** *Techniques of Attitude scale construction*, Bombay, Vakil & Sons Pvt. Ltd.
9- **Barr, A.S., (1959)**, *'Research Methods'*, in Chester W.Harris (Ed.), Encyclopaedia of Educational Research, New York, Macmillan.
10- **Bennett, Neville (1993),** *Teaching and Teacher Education*, Oxford, pergamon.
11- **Bereday, G. F. and Lanwery (1963),** *Education and Training of Teacher*, London, Trans Brother Ltd.
12- **Bacharch, S., Mitchell, S. (1983).** The Source of Dissatisfaction in Educational Administration, A Role- Specific Analysis, Educational Administration, Quarterly, 19 (1), P. 101-128.
13- **Conley S.H. Bachara, C.H.S. (1989).** The school work environment and teacher career dissatisfaction, Educational Administration Quarterly 25 (1), P.P. 58-81.
14- **Das, D.N., Behera N.P. (2004).** Teacher Effectiveness in Relationship to their Emotional Intelligence, Abstract in Journal of Indian Education, NCERT, Vol. XXX, No. 3, Nov. 2004, P.P. 51-61
15- **Garrete, H.E.** Statistics in Psychology & Education Vakils, Feeder and Simons Ltd., Bombay, 1981.
16- **Kausel, D.R. (1976).** "An Analysis of the qualities contributing to the effectiveness of Selected Principals Dissertation Abst. Int. A 37 : 2, 1976
17- **Kauts, D., Suraj, R., (2011).** Study of Teacher Effectiveness and Occupational Stress in Relation to Emotional Intelligence among Teachers at Secondary Stage. Abstract Journal of History & Social Sciences Vol. I, ISSN : 229-579.
18- **Kulsum,S., Roul. P., Sushanta. K. (2004).** Teacher Effectiveness of Autonomous and Non Autonomous College Teachers in relation to their Mental Health, Abstract Journal of Indian Education Vol. XXIX, No. 2, August 2004, P.P.84-85.
19- अग्रवाल, के. सी. (२००७), 'विद्यालय प्रशासन', आर्य बुक डिपो, दिल्ली।
20- अस्थाना डॉ. वि. (२००९), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–२.
21- अनुराधा देवी, एन.वी. एण्ड वेल्यूधन, ए. (२०१३). जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ वयूमैन लेक्चरस्स वरकिंग इन प्राइविट एण्ड गर्वेमेंट कॉलेज, इण्डियन जनरल ऑफ एप्लाइड साइकोलोजी, ४०, २५–२८.

22- चन्दराई, के. (२०१०). ओक्यूपेशनल स्ट्रैस इन टीचस, नई दिल्ली : ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।

23- जैन, किशनचंद (१९९९), 'शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

24- बार्ग वाल्टर आर. (१९६५), एजूकेशन रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन, नई दिल्ली, डेविड सिक्की कम्पनी, नई दिल्ली।

25- भटनागर, सुरेश (१९९६), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एजूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।

26- भटनागर, सुरेश, सक्सेना अनामिका (१९९७), विवेचनात्मक अध्ययन, कोठारी कमीशन, एजूकेशन कमीशन, आर. लाल बुक डिपो निकट गवर्नमेंट इन्टर कॉलेज, मेरठ।

Webliography:-

1. www.rspb.org.uk/webcams/projects
2. www.bbc.co.uk/schools/scienceclips/
3. www.ase.org.uk
4. www.elsevier.com/
5. www.shodhganga.net
6. www.usq.edu.au/users/albino/papers/site99/1345.html
7. http://www.nict.com/rajasthan-project.html

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com